कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 06 सितम्बर, 2026

भारत में उद्यानिकी निर्यात बढ़ाने की संभावनाएँ और चुनौतियाँ

अनुपम[1]*
उद्यान विज्ञान विभाग, आर.एस.एम. (पी.जी.) कॉलेज धामपुर, बिजनौर
***E-mail: anupamshakya452@gmail.com**

भारत एक कृषि प्रधान देश है और उद्यानिकी भारतीय कृषि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। फल, सब्जियाँ, फूल, मसाले तथा अन्य उद्यानिकी फसलें किसानों की आय बढ़ाने, रोजगार सृजन, पोषण सुरक्षा और विदेशी मुद्रा अर्जन में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। भारत में विभिन्न प्रकार की जलवायु और मिट्टी उपलब्ध होने के कारण अनेक प्रकार की उद्यानिकी फसलों का उत्पादन संभव है। भारत फलों और सब्जियों के उत्पादन में विश्व के प्रमुख देशों में शामिल है, फिर भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारत की उद्यानिकी निर्यात क्षमता का पूरी तरह उपयोग नहीं हो पाया है। उत्पादन की बड़ी मात्रा के बावजूद कटाई के बाद होने वाली क्षति, उचित भंडारण एवं शीत श्रृंखला की कमी, गुणवत्ता मानकों, कीटनाशक अवशेष, पादप स्वच्छता प्रमाणन, परिवहन लागत और अंतरराष्ट्रीय बाजार की आवश्यकताओं जैसी अनेक चुनौतियाँ मौजूद हैं। यदि भारत आधुनिक तकनीक, बेहतर गुणवत्ता, प्रसंस्करण, शीत श्रृंखला, मूल्य संवर्धन, किसान उत्पादक संगठनों और अंतरराष्ट्रीय बाजार की आवश्यकताओं पर ध्यान दे, तो उद्यानिकी निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है।

मुख्य शब्द: उद्यानिकी, निर्यात, फल, सब्जियाँ, शीत श्रृंखला, मूल्य संवर्धन, कटाई-पश्चात प्रबंधन, गुणवत्ता मानक।

परिचय

उद्यानिकी कृषि की वह शाखा है जिसमें मुख्य रूप से फल, सब्जियाँ, फूल, मसाले, औषधीय एवं सुगंधित पौधों तथा अन्य उच्च मूल्य वाली फसलों का उत्पादन किया जाता है। वर्तमान समय में उद्यानिकी का महत्व केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रसंस्करण, भंडारण, निर्यात और रोजगार के क्षेत्र में भी इसका योगदान लगातार बढ़ रहा है।

भारत की भौगोलिक एवं जलवायु विविधता उद्यानिकी उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण लाभ है। देश के अलग-अलग भागों में उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय, समशीतोष्ण तथा पर्वतीय जलवायु पाई जाती है। इस कारण भारत में आम, केला, अंगूर, अनार, पपीता, सेब, संतरा, प्याज, आलू, टमाटर, हरी मिर्च तथा अनेक अन्य फसलों का उत्पादन किया जाता है।

भारत में उद्यानिकी फसलों का उत्पादन लगातार बढ़ रहा है। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के अनुसार वर्ष 2024-25 में देश में फलों का उत्पादन लगभग 11.77 करोड़ टन तथा सब्जियों का उत्पादन लगभग 21.78 करोड़ टन रहा। इतनी बड़ी उत्पादन क्षमता भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है।

भारत में उद्यानिकी निर्यात की वर्तमान स्थिति

भारत से बड़ी मात्रा में फल, सब्जियाँ, फूल तथा प्रसंस्कृत उद्यानिकी उत्पाद विभिन्न देशों को निर्यात किए जाते हैं। प्रमुख निर्यात योग्य उत्पादों में आम, अंगूर, अनार, केला, संतरा, प्याज, आलू, हरी मिर्च, विभिन्न सब्जियाँ, फलों का गूदा, फलों का रस, प्रसंस्कृत सब्जियाँ तथा फूल शामिल हैं।

वर्ष 2024-25 में भारत ने लगभग 15.92 लाख टन ताजे फलों का निर्यात किया, जिसका मूल्य लगभग 1.17 अरब अमेरिकी डॉलर था। इसी अवधि में लगभग 21.51 लाख टन ताजी सब्जियों का निर्यात हुआ, जिसका मूल्य लगभग 89.4 करोड़ अमेरिकी डॉलर था। भारत के प्रमुख उद्यानिकी निर्यात बाजारों में संयुक्त अरब अमीरात, बांग्लादेश, नेपाल, मलेशिया, यूनाइटेड किंगडम, नीदरलैंड, ओमान, इराक तथा अन्य देश शामिल हैं।

उद्यानिकी निर्यात बढ़ाने की संभावनाएँ

विशाल उत्पादन क्षमता: भारत की सबसे बड़ी ताकत उसका विशाल उद्यानिकी उत्पादन आधार है। देश में फलों और सब्जियों का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है। यदि इस उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुरूप तैयार किया जाए, तो निर्यात में काफी वृद्धि की जा सकती है।

विभिन्न जलवायु क्षेत्रों का लाभ: भारत में विभिन्न प्रकार की जलवायु होने के कारण वर्ष के अलग-अलग समय में विभिन्न उद्यानिकी फसलों का उत्पादन किया जा सकता है। महाराष्ट्र अंगूर और अनार के लिए, उत्तर प्रदेश और अन्य राज्य आम के लिए, दक्षिण भारत केला उत्पादन के लिए तथा हिमालयी क्षेत्र सेब जैसी फसलों के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह विविधता भारत को अंतरराष्ट्रीय बाजार में विभिन्न मौसमों में अलग-अलग उत्पाद उपलब्ध कराने का अवसर देती है।

प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन: ताजे फल और सब्जियाँ जल्दी खराब होने वाली वस्तुएँ हैं। इसलिए इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। फलों से रस, गूदा, जैम, जेली, स्क्वैश और सूखे उत्पाद बनाए जा सकते हैं। इसी प्रकार सब्जियों से अचार, निर्जलित सब्जियाँ, जमी हुई सब्जियाँ और अन्य प्रसंस्कृत उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। मूल्य संवर्धित

कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 06 सितम्बर, 2026



उत्पादों का निर्यात बढ़ाने से किसानों और प्रसंस्करण उद्योग दोनों को लाभ मिल सकता है।

जैविक उत्पादों की बढ़ती मांग: विश्व के अनेक देशों में जैविक और पर्यावरण-अनुकूल कृषि उत्पादों की मांग बढ़ रही है। भारत में जैविक फल, सब्जियाँ, मसाले तथा अन्य कृषि उत्पादों के निर्यात की अच्छी संभावनाएँ हैं। यदि किसानों को जैविक प्रमाणीकरण, उचित पैकेजिंग, गुणवत्ता नियंत्रण और बाजार की जानकारी उपलब्ध कराई जाए, तो भारत उच्च मूल्य वाले बाजारों में अपनी स्थिति मजबूत कर सकता है।

पुष्प उत्पादन और निर्यात: पुष्प कृषि भी उद्यानिकी निर्यात का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। गुलाब, कार्नेशन, ऑर्किड, गुलदाउदी और अन्य सजावटी फूलों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग है। संरक्षित खेती, ग्रीनहाउस तकनीक तथा आधुनिक सिंचाई प्रणाली के उपयोग से उच्च गुणवत्ता वाले फूलों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

नए अंतरराष्ट्रीय बाजारों की खोज: भारत को केवल कुछ पारंपरिक बाजारों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। अफ्रीका, मध्य एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया और अन्य उभरते बाजारों में भारतीय फल एवं सब्जियों के लिए नए अवसर तलाशे जा सकते हैं। इसके लिए प्रत्येक देश की उपभोक्ता पसंद, आयात नियम, पैकेजिंग आवश्यकताओं और गुणवत्ता मानकों का अध्ययन आवश्यक है।

किसान उत्पादक संगठनों की भूमिका: भारत में अधिकांश किसान छोटे और सीमांत वर्ग से आते हैं। ऐसे किसान अकेले अंतरराष्ट्रीय बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं। किसान उत्पादक संगठन किसानों को एकत्रित करके उत्पादन, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, भंडारण और विपणन की व्यवस्था बेहतर बना सकते हैं। सामूहिक रूप से निर्यात करने पर किसानों को बाजार की बेहतर जानकारी और अधिक सौदेबाजी शक्ति मिल सकती है।

उद्यानिकी निर्यात की प्रमुख चुनौतियाँ

कटाई के बाद होने वाली क्षति: फल और सब्जियाँ अत्यधिक जल्दी खराब होने वाली फसलें हैं। कटाई के बाद उचित तापमान, नमी और स्वच्छता की व्यवस्था न होने पर इनकी गुणवत्ता तेजी से कम हो जाती है। इससे किसानों को आर्थिक नुकसान होता है और निर्यात के लिए तैयार उत्पादों की मात्रा कम हो जाती है।

शीत श्रृंखला की कमी: उच्च गुणवत्ता वाले फल एवं सब्जियों के निर्यात के लिए खेत से लेकर अंतिम बाजार तक उचित तापमान बनाए रखना आवश्यक है।इसके लिए पूर्व-शीतलन केंद्र, शीत भंडार, प्रशीतित वाहन और आधुनिक पैकिंग केंद्रों की आवश्यकता होती है। भारत के कई उत्पादन क्षेत्रों में ऐसी सुविधाएँ अभी पर्याप्त नहीं हैं।

अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानक: अंतरराष्ट्रीय बाजार में केवल उत्पाद की मात्रा महत्वपूर्ण नहीं होती, बल्कि उसकी गुणवत्ता भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। फल और सब्जियों का आकार, रंग, पकने की अवस्था, स्वच्छता, स्वाद, भंडारण क्षमता और कीटनाशक अवशेष निर्धारित मानकों के अनुरूप होने चाहिए। यदि किसी निर्यात खेप में निर्धारित सीमा से अधिक कीटनाशक अवशेष पाए जाते हैं, तो पूरी खेप अस्वीकार होने की संभावना रहती है।

पादप स्वच्छता संबंधी आवश्यकताएँ: विभिन्न देशों में आयातित फल एवं सब्जियों के लिए अलग-अलग पादप स्वच्छता नियम होते हैं। कीट एवं रोगों की रोकथाम के लिए प्रमाण-पत्र, निरीक्षण और उपचार जैसी प्रक्रियाएँ आवश्यक हो सकती हैं। इन नियमों की जानकारी और उनका पालन छोटे किसानों तथा छोटे निर्यातकों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

उचित ग्रेडिंग और मानकीकरण का अभाव: भारत में अनेक किसान छोटे स्तर पर उत्पादन करते हैं। अलग-अलग खेतों से प्राप्त उत्पादों में आकार, रंग, गुणवत्ता और पकने की अवस्था में अंतर हो सकता

है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में एक समान गुणवत्ता वाले उत्पाद की आवश्यकता होती है। इसलिए वैज्ञानिक ग्रेडिंग और मानकीकरण की व्यवस्था मजबूत करना आवश्यक है।

परिवहन की अधिक लागत: फल एवं सब्जियों को कम समय में बाजार तक पहुँचाना आवश्यक होता है। लंबी दूरी के परिवहन में समय और लागत दोनों अधिक हो सकते हैं। यदि परिवहन के दौरान तापमान नियंत्रित न रहे या उत्पाद को उचित तरीके से संभाला न जाए, तो उसकी गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

छोटे किसानों की सीमाएँ: अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए प्रमाणन, परीक्षण, पैकेजिंग, परिवहन और दस्तावेजीकरण की लागत छोटे किसानों के लिए अधिक हो सकती है। इस समस्या का समाधान किसान उत्पादक संगठनों, सहकारी समितियों तथा सामूहिक निर्यात व्यवस्था के माध्यम से किया जा सकता है।

उद्यानिकी निर्यात बढ़ाने के उपाय

आधुनिक शीत श्रृंखला का विकास: प्रमुख उद्यानिकी उत्पादन क्षेत्रों में आधुनिक शीत भंडार, पूर्व-शीतलन केंद्र, नियंत्रित वातावरण भंडारण और प्रशीतित परिवहन की सुविधाएँ विकसित की जानी चाहिए। इससे कटाई के बाद होने वाली क्षति कम होगी और उत्पाद की गुणवत्ता लंबे समय तक बनी रहेगी।

आधुनिक पैकिंग केंद्रों की स्थापना: प्रत्येक प्रमुख उत्पादन क्षेत्र में आधुनिक पैकहाउस स्थापित किए जाने चाहिए। इनमें सफाई, छंटाई, ग्रेडिंग, आकार के अनुसार वर्गीकरण, पैकेजिंग और लेबलिंग की सुविधाएँ होनी चाहिए।

अच्छी कृषि पद्धतियों को अपनाना: किसानों को सुरक्षित कीटनाशक उपयोग, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, उचित सिंचाई, समेकित कीट प्रबंधन, स्वच्छ कटाई और उचित खेत प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षित करना चाहिए। इससे उत्पादन के साथ-साथ निर्यात योग्य गुणवत्ता में भी सुधार होगा।

डिजिटल तकनीक का उपयोग: डिजिटल तकनीक की सहायता से खेत से लेकर बाजार तक उत्पाद की जानकारी दर्ज की जा सकती है। क्यूआर कोड, डिजिटल रिकॉर्ड और उत्पाद की पहचान प्रणाली के माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि उत्पाद कहाँ और कैसे तैयार किया गया था। इससे निर्यात में पारदर्शिता और उपभोक्ता विश्वास बढ़ाया जा सकता है।

प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा: जिन उत्पादों का ताजा रूप में निर्यात कठिन है, उनका प्रसंस्करण करके निर्यात किया जा सकता है। फलों का गूदा, रस, सूखे फल, निर्जलित सब्जियाँ, जमी हुई सब्जियाँ और अन्य मूल्य संवर्धित उत्पाद भारत के निर्यात को विविध बनाने में मदद कर सकते हैं।

बाजारों का विविधीकरण: भारत को नए अंतरराष्ट्रीय बाजारों की पहचान करनी चाहिए। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों, व्यापार मेलों, खरीदार-विक्रेता बैठकों तथा डिजिटल विपणन का उपयोग किया जा सकता है। साथ ही प्रत्येक देश के आयात नियमों और उपभोक्ता आवश्यकताओं के अनुसार उत्पाद एवं पैकेजिंग में आवश्यक परिवर्तन किए जाने चाहिए।

किसान उत्पादक संगठनों को मजबूत करना: किसान उत्पादक संगठनों को प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता, बाजार की जानकारी और भंडारण एवं प्रसंस्करण सुविधाओं से जोड़ना आवश्यक है। इससे छोटे किसान भी अंतरराष्ट्रीय बाजार की आपूर्ति श्रृंखला का हिस्सा बन सकते हैं।

किसानों के लिए संभावित लाभ

उद्यानिकी निर्यात बढ़ने से किसानों को नए बाजार और बेहतर मूल्य प्राप्त करने के अवसर मिल सकते हैं। इसके साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में पैकिंग, परिवहन, भंडारण, प्रसंस्करण और विपणन से संबंधित रोजगार भी बढ़ सकता है। निर्यात की आवश्यकताओं के कारण किसानों को बेहतर गुणवत्ता, वैज्ञानिक उत्पादन और आधुनिक कटाई-पश्चात तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहन मिल सकता है।

हालाँकि निर्यात बाजार अंतरराष्ट्रीय कीमतों, मौसम, परिवहन लागत, विनिमय दर और विभिन्न देशों की व्यापार नीतियों से प्रभावित होता है। इसलिए किसानों के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में संतुलित विपणन व्यवस्था महत्वपूर्ण है।

भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में भारतीय उद्यानिकी क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेंसर, ड्रोन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, सटीक कृषि, संरक्षित खेती और डिजिटल आपूर्ति श्रृंखला जैसी तकनीकों का उपयोग बढ़ सकता है।

इन तकनीकों के माध्यम से फसल की निगरानी, रोग एवं कीट पहचान, सिंचाई प्रबंधन, उत्पादन का अनुमान तथा गुणवत्ता नियंत्रण अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए सूखा एवं ताप सहनशील किस्मों, जल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई और संरक्षित खेती को बढ़ावा देना आवश्यक होगा।

निष्कर्ष

भारत के पास उद्यानिकी निर्यात को बढ़ाने की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। विशाल उत्पादन, विविध जलवायु, विभिन्न प्रकार की फसलों की उपलब्धता और अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय उत्पादों की मांग इसके प्रमुख आधार हैं। लेकिन केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। निर्यात को बढ़ाने के लिए गुणवत्ता, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, शीत श्रृंखला, भंडारण, प्रसंस्करण, पादप स्वच्छता, खाद्य सुरक्षा, परिवहन और बाजार की जानकारी पर एक साथ ध्यान देना आवश्यक है। यदि किसानों, किसान उत्पादक संगठनों, निर्यातकों, प्रसंस्करण उद्योग और सरकारी संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित किया जाए, तो भारत अपने उद्यानिकी उत्पादों के लिए अधिक अंतरराष्ट्रीय बाजार विकसित कर सकता है।

इस प्रकार उद्यानिकी निर्यात केवल विदेशी मुद्रा अर्जित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह किसानों की बाजार पहुँच बढ़ाने, ग्रामीण रोजगार पैदा करने, कृषि में मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने और भारतीय कृषि को वैश्विक बाजार से जोड़ने का महत्वपूर्ण साधन बन सकता है।

●●●